संक्षेपिका

नाट्य–काव्य हिन्दी साहित्य की विशिष्ट विधा है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्य अपने परिवेश, परिदृश्य, परिस्थितियों, विशेषताओं एवं विद्रपूताओं की गहन विमर्श शक्ति हैं। ये पौराणिक प्रसंगों से आधार ग्रहण कर नवीन स्थितियों में नए अर्थ को वहन करते हुए वर्तमान समय बोध को रूपायित करते हैं। मिथकीय आयाम के माध्यम से साहित्यकारों ने उन मूल्यों का अन्वेषण किया है जिसके कारण सम्पूर्ण मानवता को आज के संदर्भ में सार्थकता प्रदान की जा सके। रचनाकारों ने नाट्य–काव्यों में ऐतिहासिक, पौराणिक आधार को महत्त्व अवश्य दिया है अपितु इनकी मूल संवेदना अपने कथ्य के प्रति ही रही है। इन नाट्य–काव्यों में इतिहास पुराण का स्वर मंद और कथ्य को प्रकट करने वाले बोध का स्वर तीव्र हो गया है। अतः मिथकीय तत्त्व आधुनिक बोध एवं संवेदना के वाहक बन गए हैं। अंधा युग के निर्देश में कविवर धर्मवीर भारती जी का कथन इसी तथ्य की पुष्टि करता है। – ''इस दृश्य–काव्य में जिन वर्तमान समस्याओं को उठाया गया है उनके सफल निर्वाह के लिए महाभारत के उत्तरार्द्ध की घटनाओं का आश्रय ग्रहण किया गया है।'' श्री देवेन्द्र इस्सर की भी पौराणिक नाट्य–काव्यों के विषय में स्पष्ट अवधारणा है कि – ''आधुनिक जीवन की जटिलताओं को पौराणिक कथाओं एवं पात्रों के माध्यम से प्रक्षेपित करने का सफल प्रयास नाट्य–काव्यों में दृष्टिगोचर होता है।'' इसी प्रकार 'एक कंठ विषपायी' की आभार कथा में डॉ॰ दुष्यन्त कुमार ने स्वयं लिखा है कि ''जर्जर रूढ़ियों एवं परम्परा के शव से चिपटे हुए लोगों के संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठ भूमि और नये मूल्यों को संकेतित करने के लिए इस कथा में पर्याप्त सामर्थ्य है।'' वास्तव में स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में आज की जीवन्त समस्याओं एवं संवेदनाओं को रूपान्तरित करने के लिए पौराणिक प्रतीकों या ऐतिहासिक प्रसंगों का आश्रय ग्रहण किया है।

हिन्दी साहित्य का स्वातन्त्र्योत्तर काल घुटन, कुंठा, संत्रास, उत्पीड़न, द्वन्द्व एवं युद्धों की भयावहता को झेलने वाला समय रहा है। ऐसे द्वन्द्वात्मक समय में स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यकारों ने अतीत की मिथकीय शक्ति का प्रयोग उन्हीं अर्थो में किया जिन अर्थो में वह नये तथाकथित भावबोध और नई संवेदना को अभिव्यक्त कर सके। सृजनशील कवियों ने अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय देते हुए अपने समय की विकृतियों, विद्रूपताओं, विसंगतियों, कुठांओं का गहनता से चिंतन किया एवं अपने विकसित बोध के कारण उन समस्याओं का हल निकालने की पुनर्जोर कोशिश भी की। साहित्यकार अपने परिवेश, परिदृश्य एवं परिस्थितियो ंसे प्रेरणा लेकर नवीन साहित्य का निर्माण करता है। अपने युगीन जीवन की अनुभूति को वह काव्य के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। स्वतन्त्र भारत में विश्वयुद्धों के कारण फैली अमानवीयता, अनास्था, अविश्वास, धराशायी हुए मानवीय मूल्य, समाज में फैली अराजकता, कुंठा

को कवियो ने नाट्य–काव्यों के माध्यम से अभिव्यंजना प्रदान की है। स्वातन्त्र्योत्तर काल मानवीय मूल्यों के ह्रास का काल भी रहा है उस समय मानव ऐसी द्वन्द्वात्मक स्थिति में था जब वह सही गलत की पहचान करने की क्षमता भी खो चुका था। ऐसी स्थिति में मनुष्य को जीवन की सही राह दिखाना एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करना अनिवार्य हो गया था। स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने अपने नाट्य–काव्य के माध्यम से मनुष्य में मानवीय मूल्यों को आलोकित किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् जहाँ एक और मनुष्य स्वतन्त्रता पा कर प्रसन्न था वहीं शीघ्र ही उसके देखे गए स्वप्न टूटने लगे थे क्योंकि हमारा राष्ट्र अब अंग्रेजों के चुंगल से छूटकर कुछ पूँजीपतियों के हाथों में चला गया था। जिस कारण शोषक एवं शोषित वर्ग का जन्म हुआ। नाट्य काव्यों के माध्यम से कवियों ने शोषित वर्ग की व्यथा को भी अभिव्यंजना प्रदान की है।

अतीत की घटनाओं एवं पात्रों का आश्रय ग्रहण करके संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ कवि ने अपने समय की अनुभूत समस्याओं को प्रदर्शित किया है। वस्तुतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्य अपने वस्तु–संदर्भ में पुराणों को समेटे हुए भी वर्तमान जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। इनकी प्राचीनता नयी संवेदना से सम्पृक्त होकर अपना रूप त्याग देती है। इसलिए नाट्य–काव्यों का पौराणिक तत्त्व एक प्रतीक बनकर प्रेक्षक के सामने मिथक का प्रभाव छोड़ जाता है। जो परम्परा से जुड़कर अपनी विश्वसनीयता और प्रमाणिकता सिद्ध करते हैं तथा दूसरी ओर सांकेतिकता के माध्यम से पुराण के आवरण में वर्तमान समय से जुड़े रहते हैं। नाट्य–काव्यों में निहित समय बोध अपने परिवेश, परिदृश्य, परिस्थितियों की विशेषताओं एवं विद्रपताओं का सम्यक् ज्ञान है।

अध्ययन की सुविधा हेतू शोध प्रबन्ध की समुचित नियोजना के लिए इसे छहः अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में रूप की परिभाषा एवं रूपों की विविधता के आधार को स्पष्ट करते हुए अन्तर्मुखी, बर्हिमुखी एवं बहिरन्तर्मुखी कवियों पर चर्चा की गई हैं। अनुभूति और अर्थात अभिव्यक्ति उपादानों का सुन्दर सम्मिश्रण ही किसी कृति को सुन्दर एवं श्रेष्ठ रूप प्रदान करता है। अतः रूप केवल अभिव्यक्ति का ढंग मात्र न होकर, भाव का कलात्मक ढंग से प्रस्तुतीकरण है। इसी क्रम में नाट्य काव्य का पद्य नाटक, काव्य रूपक, गीति नाट्य, भावनाट्य आदि के साथ संबंध दर्शाते हुए तर्को के माध्यम से नाट्य काव्य नाम की सार्थकता को सिद्ध किया गया है।

डॉ॰ हरिश्चन्द्र वर्मा के अनुसार – ''ऐसी कृतियाँ जिनमें काव्य तत्त्व की प्रधानता होती है और शिल्प विधान नाटकीय होता है उन्हें नाट्य काव्य कहना सर्वथा समीचिन है। नाट्य–कावय में काव्य साध्य (मुख्य) है और नाटक (गौण) साधन है। अतः ऐसी कृतियाँ जो काव्यात्मक गुणों से परिपूर्ण होने के साथ–साथ नाट्कीय संवादात्मक शिल्प का आश्रय ग्रहण करती हैं। नाट्य–काव्य की संज्ञा से विभूषित होने की अधिकारिणी हैं। नाट्य–काव्य की स्वरूपगत

अवधारणा को स्पष्ट करते हुए नाट्य काव्य के तत्त्व–कथानक, चरित्रचित्रण, कथोपकन, अभिव्यंजना, बिम्ब, प्रतीक एवं अलंकार योजना, मिथक के आयाम आदि पर चर्चा की गई है।

नाट्य काव्य की परम्परा बहुत पुरानी रही है परन्तु हिन्दी साहित्य में इसका प्रारम्भ जयशंकर प्रसाद के करूणालय (1912 ई॰) से माना जाता है। नाट्य काव्य कविता में क्षमता, कल्पना, भावना और बुद्धि का उत्कृष्ट संयोजन एक साथ प्रस्तुत किया जाता है इसलिए विद्धानों ने इसे एक विशिष्ट साहित्यिक विधा के रूप में स्वीकार किया है। डॉ0 वर्मा के अनुसार जिस काव्य में परस्पर विरोधी तत्वों का जितने अधिक संश्लिष्ट रूप में उदात्त स्तर पर कौशल पूर्ण संयोजन होगा, उसमें उतनी ही सशक्त एवं महान होने की संभावना निहित होती है। इस प्रकार यह विधा अपने अन्दर अनेक परस्पर विरोधी तत्त्वों को समेटकर उनका सफलतापूर्वक नियोजन कर अपना विधागत वैशिष्ट्य स्वयं ही स्थापित कर देती है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों की पृष्ठभूमि पर चर्चा करते हुए स्वतन्त्र भारत की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को दर्शाया है। स्वातन्त्र्योत्तर काल साहित्य की दृष्टि से परिवर्तन का काल है। नाट्य काव्य प्रायः परिवर्तन काल में ही अधिक मिलते है। इस युग में प्राचीन शैली नवीन शैली को अधिकार सौंपती है। नाट्य–काव्यकारों ने पौराणिक पात्रों, प्रसंगों, घटनाओं के माध्यम से वर्तमान जीवन की मूल समस्याओं एवं उनके निवारण को नाट्य काव्य का प्रतिपाद्य विषय बनाया है सम्पूर्ण नाट्य काव्य अपने वर्तमान समय–बोध से सम्पन्न हैं।

द्वितीय अध्याय में समय एवं बोध की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए समय–बोध की परिभाषा एवं स्वरूप को प्रकट करने के साथ–साथ समय बोध के मानक तत्त्वों नवीनता, परिवर्तनशीलता, समसामयिकता एवं आधुनिकता आदि पर चर्चा की गई है। समय वायु की भांति अदृश्य है परन्तु घटनाओं एवं परिवर्तनों के माध्यम से यह हमारे समक्ष प्रत्यक्ष होता है। समय बोध अपने परिवेश, परिदृश्य, परिस्थितियों की विशेषताओं एवं विद्रूपताओं का सम्यक ज्ञान है। उचित समय बोध के कारण ही स्वातन्त्र्योत्तर रचनाकारों ने अपने समय की विद्रूपताओं, विसंगतियों पर चिंतन कर उनके समाधानों को भी रूपायित किया है तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। स्वतन्त्रता पूर्व समय बोध एवं स्वातन्त्र्योत्तर समय बोध को दर्शाते हुए इतिहास के आइने में समय बोध परिवर्तन का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। समय बोध के विविध आयाम, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक आयामों पर भी चर्चा की गई है।

समय बोध एवं इतिहास बोध के संबंध पर चर्चा करते हुए दर्शाया है कि समय बोध के लिए इतिहास बोध अनिवार्य है परन्तु यह समय बोध का पर्याय नहीं कहा जा सकता। इतिहास बोध जहाँ अतीत के ज्ञान को दर्शाता है वहीं समय बोध अतीत वर्तमान एवं भविष्य तीनों पर दृष्टिपात करता है। इतिहास बोध समय बोध की अनिवार्य कड़ी है। इसी प्रकार आधुनिकता बोध भी समय–बोध में सहायता करने वाला एक विशिष्ट पहलू है जिसे वर्तमान के संदर्भ में लिया जाता है। आधुनिकता समय बोध को प्रभावति अवश्यक करती है परन्तु समय बोध एवं

आधुनिकता अपना भिन्न–भिन्न अस्तित्व रखते हैं। समकालीन बोध अपने समय को केन्द्र में रखकर उसी के इर्द गिर्द घुमता है जबकि समय बोध अपने अतीत से शिक्षा प्राप्त कर वर्तमान को संवारता हुआ भविष्य की ओर अग्रसर रहता है। समय बोध साहित्य एवं साहित्यकार तीनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। इसी क्रम में स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों के मिथकीय चिंतन पर चर्चा की गई है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में प्राचीन संदर्भो का संकेत रूप में प्रयोग करते हुए कवियों ने पौराणिक आयामों को वर्तमान समय बोध का आवरण प्रदान किया है। पुराणों को आधार बनाकर कवियों ने अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता को प्रदर्शित किया।

तृतीय अध्याय में स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में निरूपित राजनीति विषयक समय बोध का अध्ययन किया गया है। राजनीति का मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हस्तक्षेप है। नाट्य काव्यकारों ने विभिन्न पौराणिक पात्रों एवं प्रसंगों के माध्यम से वर्तमान समाज में व्याप्त अनैतिक एवं भ्रष्ट राजनीति, स्वार्थपूर्ण राजनीति, राजा और प्रजा का स्वरूप तथा वर्तमान पूँजीवादी राजव्यवस्था का चरित्रांकन किया है। 'एक कंठ विषपायी', 'शम्बूक' 'चिड़िया की आँख', 'अंधायुग', 'सूखा सरोवर', 'महाप्रस्थान' आदि में स्वार्थपूर्ण अमानवीय एवं भ्रष्ट राजनीति का ही चित्रण किया गया है। वहीं 'संशय की एक रात', 'उत्तर प्रियदर्शी', 'प्रवाद पर्व' एवं 'अंधा युग' में वर्तमान समय में युद्ध सबंधी समस्याओं पर चिंतन करते हुए सुझाया गया है कि किसी भी समस्या का समाधान युद्ध नहीं है। 'शम्बूक एवं चिड़िया की आँख' नाट्य–काव्य के माध्यम से वर्तमान राजनेताओं का प्रशासनिक कार्यो में अत्यधिक हस्तक्षेप को दर्शाया है। राजनेता आम जनता का शोषण करते हुए केवल अपनी स्वार्थ पूर्ति करता है। आज लोकतंत्र एक दिखावा बनकर रह गया है। सत्ता प्राप्ति के लिए नेता नित नए षड्यंत्रों के माध्यम से अनेक अपराधों को बढ़ावा दे रहा है। जिससे साधारण जनता में आक्रोश के स्वर परिलक्षित होते हैं। भ्रष्ट अधिकारियों की कुटनीतियों की शिकार सामान्य जन की दयनीय स्थिति को भी स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में दर्शाया गया है। 'चिड़िया की आँख' नाट्य–काव्य में भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा वन्य जनजातियों पर किये जाने वाले अत्याचार के माध्यम से वर्तमान परिस्थितियों को प्रत्यक्ष किया गया है। अंत में आणविक संस्कृति के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कवियों ने परमाणु बम जैसी विनाशकारी शक्ति के प्रति व्यक्तियों एवं राष्ट्रों को चेताया है। यदि भविष्य में इस प्रकार के विनाशकारी हथियारों के प्रयोग को नहीं रोका गया तो सम्पूर्ण मानव जाति विनष्ट हो जाएगी। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में मिथकों के माध्यम से वर्तमान राजनीति के सभी पक्षों पर विचार डालते हुए समाज में सजगता पैदा करने का भरसक प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय में स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में निरूपित समाज विषयक समय बोध को चित्रित किया गया है। वर्तमान समय में समाज विभिन्न बुराइयों से ग्रस्त है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों 'कर्ण', 'द्रौपदी', 'अंधा युग', 'एक कंठ विषपायी', 'चिड़िया की आँख, 'सूख सरोवर' आदि में पौराणिक कथाओं को माध्यम बनाकर कवियों न वर्तमान समाज की विद्रूपताओं,

विकृतियों, विसंगतियों एवं विषमताओं को चित्रित किया है। समाज में फैली, अनमेल विवाह, वर्ण व्यवस्था, एवं जातिगत भेदभाव, अंधविश्वास, रूढ़िवादी सोच एवं संवेदनहीनता की समस्या के साथ–साथ सामाजिक संबंधों के ह्रास का वर्णन भी कवियों ने अपने नाट्य काव्यों में दर्शाया है ग्रामीण युवती के माध्यम से वर्तमान समय में हो रहे बलात्कार जैसे भयंकर अपराधों एवं संवेदनहीनता को प्रत्यक्षत किया हैं। इसके साथ–साथ कवियों ने प्राचीन मृत परम्पराओं को त्याग कर नवीन मूल्य ग्रहण करने का भी संदेश दिया है। समाज के लिए घातक बनी युद्ध की समस्या एवं साम्प्रदायिकता को भी उभारा है जो आधुनिक समय की बहुत बड़ी चुनौती है। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग होने के कारण वह अपने समय के समाज से भिन्न कैसे हो सकता है अपने समय की व्रिदूपताओं का गहन बोध होने के कारण ही उसे तत्त्वदर्शी एवं दूरद्रष्टा कहा जाता है। वह समाज का सक्रिय सदस्य भी है। इसलिए पौराणिकता के साथ–साथ आधुनिकता के तत्त्वों को समेटे हुए समीक्ष्य नाट्य–काव्यों में जीवन की विषम परिस्थितियों के समक्ष सही हल लेकर आगे बढ़ने का प्रयास है। जीवन के यथार्थ को गहराई से पकड़ने तथा उसे जड़ता मुक्त कर चैतन्य की ओर ले जाने की प्रक्रिया में रत स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में रचनाकारों ने अपने विकसित समय बोध का परिचय दिया है।

पंचम अध्याय में स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में रचनाकारों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक समय बोध को अभिव्यक्ति प्रदान की है। धर्म एवं संस्कृति मानव समाज की आंतरिक उपलब्धियों की प्रतीक है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों के माध्यम से रचनाकारों ने सत्य, मर्यादा, करूणा, अंहिसा, नैतिकता, दया, तप, कर्म, क्षमा आदि मानवीय मूल्यों की स्थापनाा का प्रयास किया है। 'सूखा सरोवर', 'अंधा युग', 'प्रवाद पर्व', 'संशय की एक रात', 'शम्बूक', 'अग्निलीक महाप्रस्थान आदि नाट्य काव्यों में सत्य एवं मर्यादा जैसे मूल्यों का हनन होने के कारण विनष्ट हो रही धर्म एवं संस्कृति हो दर्शाया है तथा भ्रष्टाचार, पापाचार, सामाजिक कुरीतियों, अनास्था, अनैतिकता, मोह तथा अमानवीयता से समाज को मुक्त कर दया, करूणा सौहार्द, सहनशीलता जैसे मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया है। अनेक पौराणिक पात्रों, 'एक कंठ विषपायी' में दक्ष तथा 'शिव' 'अंधायुग में ज्योतिष', 'सूखा सरोवर में पुरोहित', उत्तर प्रियदर्शी में भिक्षु के माध्यम से धर्म एवं संस्कृति को चित्रित करते हुए सही मार्ग पर चलने का संदेश दिया है। क्योंकि समृद्ध संस्कृति किसी भी राष्ट्र के उत्कर्ष में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। धर्म एवं संस्कृति का प्रयोजन जीवन को परिष्कृत एवं प्रकाशित करना होता है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में जहाँ अपनी प्राचीन संस्कृति के महत्व को परिलक्षित किया है वहीं वर्तमान समय में इस पर पड़ रहे पाश्चात्य प्रभाव पर भी दृष्टिपात किया है। पाश्चात्य के अंधानुकरण से हमारे सांस्कृतिक मूल्य विनष्ट होते जा रहे हैं। इसी कारण आज भी नाट्य–काव्यों के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा अनिवार्य बन पड़ी है। सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का महत्व उतना ही आज भी है जितना स्वातन्त्र्योत्तर काल में था।

षष्टम अध्याय में समय बोध के आर्थिक आयाम पर प्रकाश डाला गया है। अर्थ समय बोध का नियामक तत्त्व है। समाज में जीवित रहने के लिए प्रतिक्षण अर्थ की आवश्यकता पड़ती है। अर्थ सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। वर्तमान समाज में अर्थ के कारण बलात्कार, भ्रष्टाचार, शोषण, आत्महत्या आदि को बढ़ावा मिल रहा है। चिड़िया की आँख में अर्जुन, 'उतरप्रियदर्शी' के अशोक, 'शम्बूक' में 'राम', 'सूखा सरोवर' में छोटा राजा, 'एक कंठ विषपायी' में दक्ष, 'महाप्रस्थान' में युधिष्ठिर आदि पौराणि पात्रों के माध्यम से कवि ने वर्तमान भ्रष्ट शासकों को चित्रित किया है। इसी शोषण को 'चिड़ियाँ की आँख' के एकलव्य, 'शम्बूक' 'एककंठ विषपायी' के सर्वहत, 'प्रवाद पर्व' के धोबी, एवं 'अंधा युग' के दो प्रहरी आदि पात्रों के माध्यम से समाज में कर्म के आधार पर समानता एवं शोषण के विरूद्ध आवाज को प्रत्यक्ष किया है। जो वर्तमान समय की आवश्यकता बन चुकी है। 'अंधा युग', 'संशय की एक रात', 'महाकाल', 'एक कंठ विषपायी' आदि के माध्यम से युद्धों के कारण देश की अर्थव्यवस्था पर मण्डरा रहे खतरे को भी रूपायित किया है। अतः स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने अपने समय की परिस्थितियों के माध्यम से वर्तमान समय के प्रखर अर्थ विषयक समय–बोध को वाणी प्रदान की है।

वस्तुतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यकारों ने प्रखर समय–बोध का परिचय देते हुए अतीत की घटनाओं एवं पात्रों का आश्रय ग्रहण करके संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ अपने समय की अनुभूत समस्याओं को प्रदर्शित किया है। मूलतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्य अपने वस्तु संदर्भ में पुराणों को समेटे हुए भी वर्तमान जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। इनकी प्राचीनता नयी संवेदना से सम्पृक्त होकर अपना रूप त्याग देती है। इसलिए नाट्य काव्यों का पौराणिक तत्त्व एक प्रतीक बनकर प्रेक्षक के समक्ष मिथक का प्रभाव छोड़ जाता है, जो परम्परा से जुड़कर अपनी विश्वसनीयता और प्रमाणिकता सिद्ध करते हैं। तथा दूसरी और संकेतिकता के माध्यम से पुराण के आवरण में वर्तमान समय से जुड़े रहते हैं। ये पौराणिक होते हुए भी नवीन परिस्थितियों में नए अर्थ का वहन करते हैं। इसी कारण वर्तमान समय में भी इनका महत्व उतना ही है जितना स्वातन्त्र्योत्तर काल में रहा है। अतः पौराणिक प्रसंगों को आधार बनाकर रचनाकार नए मूल्यों को संकेतित कर वर्तमान समयबोध को व्यक्त करते है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में रचनाकारों ने समय बोध के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक आयामों के माध्यम से वर्तमान यथार्थ को चित्रित करने का अथक प्रयास किया है। वर्तमान समय में उनकी अनुठी महत्ता को देखकर कहा जा सकता है कि स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाट्य काव्य साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि हैं।